

श्री:

परमपति परमात्मा की असीम कृपा से प्रेमी भक्तों के लिए हमें यह छोटी सी

"दैनिक-प्रार्थना" नामक पुस्तक प्रकाशित करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इस पुस्तक में शास्त्रों, श्री गीता जी, रामायण जी, शिवार्चन तथा अन्य धार्मिक मुख्य ग्रन्थों से ईश्वर-स्तुति के पद चुन-चुन कर लिये गये हैं। चूँकि यज्ञ-हवन आदि करना मनुष्य का प्रमुख कर्तव्य है। अतः हमने इस पुस्तक में यज्ञ-वधि भी अंकित की है। ईश्वर के प्रत्येक शब्द को उनका नाम समझ कर हमें उनका गुणानुवाद करना चाहिये। ईश्वर के गुणानुवाद के लिए यह पुस्तिका उपयोगी है।

मैं आशा करता हूँ कि प्रेमी भक्तजन इसका नित्य पाठ करके अपने इहलोक और परलोक को सुधारेंगे। मनुष्य भगवान को इसी जन्म में पाना व भव-बन्धन से मुक्ति पाकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है। यह तभी हो सकता है जब हम अपने जीवन के एक भी पल में ईश्वर और मृत्यु को कभी भूलेंगे नहीं।

अन्त में मैं श्री सनातन धर्म सभा, लाजपत नगर-3 के प्रधान श्री केवल कशोर जी तनेजा, प्रधानमन्त्री श्री चुन्नी लाल जी चावला तथा कोषाध्यक्ष लाला आशा राम जी एवं कर्म-नष्ठि प्रचार मन्त्री श्री सुरेन्द्र नाथ जी मेहनदीरता का पूर्णरूप से दिये गये सहयोग की सराहना करता हूँ।

-पं० माधा राम पुजारी

ॐ ॐ ॐ

## मंगलमय जीवन के लिए याद रखिये

१. कर्मकाण्ड करने वाले व्यक्ति को ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिये।
२. मलत्याग, मैथुन, दन्त धावन, होम, स्नान, भोजन, जप करते समय मौन रहना चाहिये।
३. एकादशी, अमावस्या और वशिष-पर्व तथा श्राद्धादिके दिन दन्त धावन नषिद्ध है।
४. रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवार को तैल-पददन नहीं करना चाहिये। परन्तु प्रतिदिन लगाने वाले के लिए नषिद्ध नहीं है।
५. जल में नमक स्नान तथा अग्नौच्छे बनि भोजन वर्जित है।
६. पुरुष और स्त्री को एक पात्र में भोजन नहीं करना चाहिये।
७. भोजन करते, छीकते, उबासी लेते, वस्त्र और अंजन लगाते समय, खुले स्तन, गुप्तांग, नयन व प्रसव के समय स्त्री को देखने से पुरुष का तेज नष्ट हो जाता है।
८. मन्दिर में भगवद्दर्शन, पंचामृत, बलि-वैश्व, महायज्ञ पंच दीप नवित्त के लिए पंच आहुति और प्रतिदिन हो सके तो गायत्री-मंत्र से हवन करे।
९. सन्ध्यादनित्य-कर्म, देव, ऋषि, पति-तर्पण यद्य कचित् भगवन्नाम ही वास्तव में मनुष्य का वशिष कर्म है। जसै करना एक गृहस्थी का आवश्यक कार्य है।

॥ ॐ ॥

### मंगलमय जीवन के लिए याद रखिये

१. कर्मकाण्ड करने वाले व्यक्ति को ब्रह्ममुहूर्त में उठना चाहिये।
२. मलत्याग, मैथुन, दन्त धावन, होम, स्नान, भोजन, जप करते समय मौन रहना चाहिये।
३. एकादशी, अमावस्या और वशिष-पर्व तथा श्राद्धादिके दिन दन्त धावन नषिद्ध है।
४. रवि, मंगल, गुरु और शुक्रवार को तैल-पददन नहीं करना चाहिये। परन्तु प्रतदिनि लगाने वाले के लिए नषिद्ध नहीं है।
५. जल में नमक स्नान तथा अग्नौच्छे बनि भोजन वर्जित है।
६. पुरुष और स्त्री को एक पात्र में भोजन नहीं करना चाहिये।
७. भोजन करते, छीकते, उबासी लेते, वस्त्र और अंजन लगाते समय, खुले स्तन, गुप्तांग, नयन व प्रसव के समय स्त्री को देखने से पुरुष का तेज नष्ट हो जाता है।
८. मन्दिर में भगवद्दर्शन, पंचामृत, बलि-वैश्व, महायज्ञ पंच दीप नवित्त के लिए पंच आहुति और प्रतदिनि हो सके तो गायत्री-मंत्र से हवन करे।
९. सन्ध्यादनित्य-कर्म, देव, ऋषि, पति-तर्पण यद्य कचित् भगवन्नाम ही वास्तव में मनुष्य का वशिष कर्म है। जिसै करना एक गृहस्थी का आवश्यक कार्य है।

१०. मन की वृत्तियों को स्थिर रखने के लिए ब्रह्मचर्य सर्वोत्तम साधन है। अतः ब्रह्मचर्य की रक्षा के लिए वटरस, तडिण, कटु और दूषित पदार्थों से दूर रहिये।
११. प्रातः स्मरण व स्वाध्याय के लिए गीता, रामायण, उपनिषद् एवं प्रार्थना के श्लोक तथा संध्या के मन्त्र कण्ठस्थ होने चाहिये।
१२. स्मरण रहे सत्संग में, प्रवचन में, कीर्तन आदि में व्यर्थ बातें करना पाप है। जो कार्य चल रहा हो उसी का अनुकरण करो।
१३. उठते-बैठते, चलते-फरिते, खाते-पीते हर समय भगवान को स्मरण करना चाहिये।
- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

प्रातः स्मरणम्

प्रातः स्मरामजिननी चरणारवन्दिम्,

संसार सागर समुत्तरणैक सेतुम्।

प्रातः स्मरामगुरुदेव पादारवन्दिम्,

अज्ञान घोर तमिरिन्ध वनिश हेतुम्॥ १ ॥

प्रातः स्मरामगिणनाथ पादारवन्दिम्,

देवेदर सकल वघ्न वनिश हेतुम्।

प्रातः स्मरामभुवनेश पादारवन्दिम्,

मुक्तिप्रदं सकल कल्मष नाश हेतुम्॥ २ ॥

प्रातः स्मरामगिरिजा चरणारवन्दिम्,

कामाददोष जलपूर्ण भवाब्धपोतम्।

प्रातः स्मरामगिरिजेश पादारवन्दिम्,

धर्मार्थ काम भव-मोक्ष वधान हेतुम्॥ ३ ॥

प्रातः स्मरामभितिलेश सुतात्र पिञ्चम्,

अज्ञान नाश हरभक्तिविकिस हेतुम्।

प्रातः स्मरामरिघुनाथ पादारवन्दिम्,

ब्रह्मा सुरेश शवि नारद सेव्य मानम्॥ ४ ॥

प्रातः स्मरामवृष भानु सुतात्र पिञ्चम्,

प्रेमामृतैकमकरन्द सौभ पूर्णम्।

प्रातः स्मरामभिधु सूदन पाद पञ्चम्,

प्रेमाश्रवं सजल मेघ रविमनो ज्ञानम्॥ ५ ॥

## मंगल-चरण

यं ब्रह्मा वरुणेन्द्र रुद्र मरुतः सत्तुन्वन्तदिव्यैस्तवैः,  
वेदैः सांग पदक्रमोप नषिदै र्गायन्तर्यिसामगाः।  
ध्यानावस्थति तद्गतेन मनसा पश्यन्तयिं योगिनी,  
यस्यान्तं न वदुः सुरा सुरगणा देवाय तस्मै नमः॥  
वंशी वभिषति करान्नव नीरदाभात्,  
पीताम्बराद्भरुण वम्बि फलाधरोष्ठात्।  
पूर्णेन्दु सुन्दर मुखारवन्दि नेत्रात्,  
कृष्णात् परं कमिप तित्त्वमहं न जाने॥  
नलाम्बुज श्यामल कोमलांगम्,  
सीता समारोपति वाम भागम्।  
पाणौ महासायक चारु चापम्,  
नमामशिमं रघुवंश नाथम्॥  
नमो सत्त्वनन्ताय सहस्रमूर्तये,  
सहस्रपादाक्षशिरौ बाहवे।  
सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते,  
सहस्र कोटयुग धारिणि नमः॥  
वासुदेव सुतं देव कंस चाणूर मर्दनम्।  
देवकी परमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम्॥  
कर्पूरगौर करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम्।  
सदावसन्तं हृदयारवन्दि भवं भवानसिहतिं नमामि।  
मंगलं भगवान् वषिणु मंगलं गरुडध्वजः।  
मंगलं पुण्डरीकाक्ष मंगलायतनो हरिः॥

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हताय च।  
जगद्धृताय कृष्णाय गोवन्दिाय नमो नमः॥  
मूकं करोत वाचालं पंगु लंघयते गरिम्।  
यत् कृपातमहं वन्दे परमानन्दं माधवम्॥  
नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।  
देवी सरस्वतर्व्यासं ततो जयमुदीरयेत्॥  
रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय मानसे।  
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः॥  
तत्रैव गंगा यमुना त्रिविणी गोदावरी सन्धि सरस्वतश्च।  
सर्वाणां तीर्थानां विसन्तति तत्र यत्राच्युतोद्धार कथा प्रसंगः॥  
कदा वाराणस्यां अमर तटनिरोधसं विसन्।  
वसानोऽहं कौपीनं शरिसन्निधिं धानो जनपुटम्॥  
अये गौरीनाथ त्रिपुर हर शम्भो त्रिनयनः।  
प्रसीदेत्याकरोशं नमिषिमविनेष्यामदिविसान्॥  
कदा वृन्दारण्ये वमिल यमुना तीर पुलनि,  
चरन्तं गोवन्दं हलधर सुदामादसिंहतिम्।  
अये कृष्ण स्वामिन् मधुर मुरली वादन वभि,  
प्रसीदेत्याकरोशं नमिषिमविनेष्यामदिविसान्॥  
॥ हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे ॥  
॥ हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

## आरती श्री लक्ष्मी नारायण जी की

श्रीउम जय लक्ष्मी रमणा, स्वामी जय लक्ष्मी रमणा।  
सत्यनारायण स्वामी जन पातक हरणा। ॐ जय०। टेक।  
रत्न जड़ति सहिसन अद्भुत छविराजे। स्वामी०।  
नारद करत नरितर घण्टा ध्वनि बाजे। ॐ जय०। १।  
प्रगट भयो कलौ कारण दवजि को दर्श दियो। स्वामी।  
बूढ़ो ब्राह्मण बन के, कंचन महल कियो। ॐ जय०। २।  
दुर्बल भील कराल जनि पर कृपा करी।। स्वामी०।।  
चन्द चूड एक राजा जनिकी वपिद हरी। ॐ जय०।। ३।।  
वेश्य मनोरथ पायो श्रद्धा तज दीनो।। स्वामी०।।  
सो फल भोग्यो प्रभुजी फरि स्तुतकीनी। ॐ जय०।। ४।।  
भाव भक्तिके कारण छनि छनि रूप धरयो।। स्वामी०।।  
श्रद्धा धारण कीनी जनिके काज सरयो। ॐ जय०।। ५।।  
ख्वाल बाल संग राजा वन में भक्तिकरी।। स्वामी०।।  
मन वांछति फल दीनो दीन दयाल हरी। ॐ जय०।। ६।।  
चढ़त प्रसाद सवायो कदली फल भैया।। स्वामी०।।  
धूप दीप तुलसी से राजो सत्य देवा।। ॐ जय०।। ७।।  
स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावे।। स्वामी०।।  
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछति फल पावे।। ॐ जय०।।



## श्री शवि जी की आरती

श्रीउम जय शवि ओंकारा स्वामी जय शवि ओंकारा।  
ब्रह्मा वशिष्णु सदा शवि अर्धाङ्गी गौरा॥ ॐ हर-३ महादेव॥ टेक॥  
एकानन चतुरानन पंचानन राजे। स्वामी०।  
हंसासन, गरुडासन, वृषवाहन साजे॥ ॐ हर-३ महादेव॥  
दो भुज चार चतुर्भुज दशभुज ते सोहे। स्वामी०।  
तीनों रूप नरिखता त्रिभुवन जन मोहे॥ ॐ हर-३ महा०॥  
अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी। स्वामी०।  
चन्दन मृगमद लेपन भाले शशधारी॥ ॐ हर-३ महा०॥  
करके त्रिशूल कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता। स्वामी०।  
जगकर्ता संघर्ता जगपालन करता॥ ॐ हर-३ महा०॥  
लक्ष्मी और सावतिरी पार्वती संगे। स्वामी०।  
अर्धाङ्गी गायत्री शवि गौरा संगे॥ ॐ हर-३ महा०॥  
श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे। स्वामी०।  
सनकादकि वज्रियादकि भूतादकि संगे॥ ॐ हर-३ महा०॥  
ब्रह्मा वशिष्णु सदाशवि जानत अवविका। स्वामी०।  
प्रणवाक्षर के मध्ये यह तीनों एका॥ ॐ हर-३ महा०॥  
तीनों एक स्वरूपा हृदय में धरना। स्वामी०।  
हर हर रटते ब्रह्मा भव सागर तरना॥ ॐ हर-३ महा०॥  
पार्वती पर्वत में वसिजे शंकर कैलाशी। स्वामी०।  
भाक भभूरा के भोजन भस्मों में वासी॥ ॐ हर-३ महा०॥  
हाथों में कंगन कानों में कुंडल गल मोतयिन माला। स्वामी०।  
जटा में गंगा वसिजे धोकुल मृग छाला॥ ॐ हर-३ महा०॥  
स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै। स्वामी०।  
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछति फल पावै॥ ॐ हर-३ महा०॥

श्री हनुमतये नमः  
नमो अंजनी नन्दन वायु पुत्र।  
सदा मंगलाकार श्रीराम दूतम्।  
महावीर वीरेश विकिरालवेशं।  
घनानन्द नहिन्द हरता क्लेशं॥  
कयि कार्य सुग्रीव के आप सारे।  
मल्लि राम से शोक संदेह टारे॥  
गये लंक वारीश शंका न खाई।  
हता पुत्र लंकेश लड़ाई जबाई॥  
सयिा का सन्देशा प्रभु को सुनाया।  
हयि हर्ष श्री राम ने कण्ठ लाया॥  
गई मूर्छा राम भ्राता पै छाजै।  
संजीवो जड़ी लाये मूर्छा नवाजै॥  
कहै भक्तमण्डल हरो दुःख स्वामी।  
नमो वायु पुत्र नमामी नमामी॥

## आरती दुर्गा जी की

जनि पर है प्रसन्न, उनके कटे सभी फन्द, होवे सकल आनन्द  
कीजै माता जी की आरती॥ टेक॥  
ध्यावे देवो की संसार, मुख से बोले जय-२ कार, सभी नर  
और नार वेद पढ़ते हैं वदियार्थी॥  
स्वर्ण का सहिसन, जापै सारे बैठी आसन, हो रही मन्दरि में  
इन्द्रासन घण्टा झालर झंकारती॥ १॥ जनि०॥  
करले हो मन ज्ञान, धरले माता जी का ध्यान,  
काम सभी होवे परवान, ज्ञान हृदय से उच्चारती॥  
बाहे सुने टेर, जरा लावै नहीं देर,  
खबर जल्दी ले सवेर फूल माला गल सगिरती॥२॥ जनि०॥  
करै सहि की सवारी, दुर्गा लागै बहुती प्यारी,  
वाके चरणों में बलहिरी, ठाढ़े दुश्मन को ललकारती॥  
लौकडिया अगवानी, खुशी हुई महारानी,  
आगे दानव भयमानी, जहाँ असुरन को मारती॥३॥ जनि०॥  
चौघ ऊपर सोहे छत्र, पहने सुहै-२ वस्त्र,  
अष्टभुजा धारी शस्त्र, त्रिचि दल के कलिकारती॥  
मुनले हंस पयिरा, दुर्गा करेगी नसितारा,  
वदिया उर्वी का सहारा बेड़ा भव सागर से तारती॥४॥ जनि०॥  
सेवक सेवत है कपूर, सब को होती है मंजूर,  
पाप भागे सभी दूर, रोग कष्ट को नविरती॥  
जसिने हेत लगाया, पाप पुण्य जो बढ़ाया,  
मुख से गंगा सोई पाया जतिरंज को नविरती॥५॥ जनि०॥

## आरती दुर्गा जी की

जनि पर हैं प्रसन्न, उनके कटे सभी फन्द, होवे सकल मानस्  
कीजे माता जी की आरती। टेक॥  
ध्यावे देवी को संसार, मुख से बोले जय-ए-कार, सभी नर  
और नार वेद पढ़ते हैं वदियार्थी॥  
स्वर्ण का सहिसन, जाए मारे बैठी आसन, हो रही मन्दरि में  
इन्द्रासन घण्टा स्फाटर मकरारती॥१॥ जनि॥  
करले हो मन ज्ञान, घरेले माता जी का ध्यान, काम सभी होवे परवान  
ज्ञान हृदय से उच्चारती॥  
चाहे सुने टेर, जरा लावे नहीं देर, खबर जल्दी ले सबेर  
फूल माला गल सगिरती॥२॥ जनि॥  
करे सहि की सवारी, दुर्गा लागे बहुती प्यारी, वाके चरणों में बलहिरी, ठाढे दुश्मन को  
ललकारती॥  
लोकडिया प्रभावानी, खुशी हुई महारानी, आगे दानव भयमानी, जहाँ अधुरन को मारती॥३॥ जनि॥  
गीत ऊपर सोहे छत्र, पहने सुहे-ए वस्त्र, अष्टभुजा धारी शस्त्र, वचिदिल के कलिकारती॥  
सुनले हंस पयिरा, दुर्गा करेगी नसितारा, लयिा असी का सहारा बड़ा भव सागर से  
तारती॥४॥ जनि॥  
सेवक खवत हैं कपूर, सब की होती है मंजूर, पाप भाग सभी दूर, रोग कष्ट को नविरती॥  
जसिने हेत लगाया, प्राण पुष्ट जी चढ़ाया, मुख से माँगा माई पाया चतिरंजन को  
नविरती॥५॥ जनि॥

मैय्या री रदिधिदे, सदिधिदे, अष्ट नव नधिदे,  
वंश में वृद्धिदे बाक वाणी॥  
हृदय में ज्ञान दे, चित्त में ध्यान दे,  
महा. वरदान दे, राजरानी॥  
गुणी से रीत दे, जंग में जीत दे,  
चरणों में प्रीत दे, श्री भवानी॥  
दुःख को दूर कर, सुख भरपूर कर,  
भय चिन्ता दूर कर, जगती जोत देवा महारानी॥  
जोत जागती भवानी, ब्रह्मा वशिष्ठ के मनमानी,  
ध्यावे गुणी और ज्ञानी, शूरके काज सुधारती॥  
ऐसी सच्ची माई, कलियुग में सहाई,  
करे संकट में सहाई, अपने सेवक को उभारती॥जनि॥

































